देहरादून में आयोजित अमर शहीद मेजर दुर्गा मल्ल जी पर आधारित डाकटिकट विमोच समारोह में माननीय राज्यपाल महोदय का संबोधन

(23 जनवरी 2023)

जय हिन्द!

अमर शहीद मेजर दुर्गा मल्ल जी के जीवन पर आधारित **डाक टिकट विमोच समारोह** में आप सभी के बीच आकर मुझे अत्यन्त **प्रसन्नता हो रही है।**

सबसे पहले मैं **'उत्तराखण्ड राज्य नेपाली भाषा समिति देहरादून'** को आज के इस समारोह के आयोजन के लिए हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं देता हूँ।

हम सब जानते हैं कि **नेपाली भाषा, गोर्खाली समुदाय,** भारतीय और नेपाली संस्कृति के परस्पर **प्रेम, सौहार्द सद्भावना और समरसता** के महत्वपूर्ण घटक हैं।

भारत की एकता और अखंडता में नेपाली समुदाय का बहुत बड़ा योगदान है।

आज जब हम अमर शहीद मेजर दुर्गा मल्ल जी की पवित्र स्मृति में यहां डाक टिकट का विमोचन कर रहे हैं, यह भी भारत की गौरव की रक्षा के लिए नेपाली समुदान के महान योगदान को प्रकट करता है।

हम सब जानते हैं कि **शहीद मेजर दुर्गा मल्ल जी नेअपने प्राणों का बलिदान किया था।** देश की एकता, अखंडता और रक्षा के लिए अपना **सर्वस्व न्यौछावर** कर दिया था।

आज जब हम शहीद दुर्गा मल्ल जी की **जीवन चरित्र** को पढ़ते हैं तो पता चलता है कि इस देश के लिए **उन्होंने कितने महान कार्य किये हैं।**

जरा याद करें, उस समय को जब आज से **एक सौ दस साल पहले सन 1913 में** डोईवाला में **नायब सूबेदार गंगा मल्ल** जी **के पुत्र शहीद दुर्गा मल्ल जी का जन्म हुआ था।**

पूरा देश अंग्रेज़ों की गुलामीं से जकड़ा हुआ था और **विरले** वीर योद्धा और **महापुरुषही** अंग्रेजों की उस **दासता से मुक्ति के** लिए **संघर्ष कर रहे थे।**

उन्हीं में से **अमर शहीद मेजर दुर्गा मल्ल जी भी** एक हैं जिन्होंने इस देश की रक्षा के लिए अपनी सभी सुख–सुविधाओं को त्याग कर अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ने का दृढ़ साहस दिखाया था।

जब चारों ओर अंग्रेज़ों की दमनकारी शक्तियां भारत को रौंद रहीं थीं, तब एक बालक अपनी राष्ट्र भक्ति की भावनाओं को सर्वोच्च महत्व देते हुए देश के लिए कुछ कर गुजरने का संकल्प ले रहा था।

हमें दुर्गा मल्ल जी के जीवन से अनोखी सीखें मिली हैं, उनकी शहादत के बाद भी समाज को एक दिशा मिली और विपरीत परिस्थितियों में भी **राष्ट्रप्रथम की भावना** से कैसे जीवन जिया जाता है।

कभी–कभी तो मुझे ऐसा लगता है कि उनका नाम दुर्गा मल्ल था और जैसे **दुर्गा मां के आशीष से ही वे भारत मां की स्वतंत्रता के संघर्ष के लिए ही उत्पन्न हुए थे।**

शहीद मेजर दुर्गा मल्ल जी ने **राष्ट्रीय विचारधारा को गले लगाया,** भारत की स्वाधीनता के संग्राम में भाग लिया, देश के लिए बड़े–बड़े कारनामे किये।

अंग्रेज सारकार उनकी **वीरता चतुराई और पराक्रम से** घबरा गयी, इस लिए घबराकर अंग्रेज सरकार **उनके घर पर** कई बार **छापे मारने** को मजबूर हुई।

सबसे पहले वे गोर्खा राइफल्स में एक सैनिक के रूप भरती हुए थे और वहां भी उन्होंने द्वितीय विश्वयुद्ध में अपनी वीरता शौर्य और पराक्रम का प्रदर्शन किया।

दुर्गा मल्ल जी एक सच्चे देशभक्त थे, इस लिए वे जानते थे कि उनके लिए क्या सही है, उन्हें क्या करना है, इसलिए वे अंग्रेज़ों की पराधीनता को छोड़कर **1942** में नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के आह्वान पर **आजाद हिन्द फौज में भर्ती हो गये थे।**

नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के साथ **उन्होंने गुप्तचर के रुप में** गोपनीय सूचनायें एकत्र की और इसके बल पर नेताजी के **अनेक रणनीतियों को सफल बनाया।**

आज़ाद हिन्द फौज ने लड़ते–लड़ते कोहिमा तक अपनी पहुँच बना दी थी।

जरा सोचें कैसे हमारे देशभक्त वीर जवनों ने आजाद हिन्द फौज के लिए कार्य किये थे।

27 मार्च 1944 का दिन कभी भूलाया नहीं जा सकता है जब अंग्रेज सैनिकों ने दुर्गा मल्ल जी को **युद्धबंदी बना लिया** और सैनिक अदालत में देशद्रोह का आरोप लगा्ते हुए मृत्युदण्ड सुना दिया था।

इसी मृत्युदण्ड के कारण **उन्हें 25 अगस्त 1944 को** दिल्ली की तिहाड़ जेल में **फांसी के फंदे को चूमने को मजबूर कर दिया था और** मेजर दुर्गा मल्ल ने भारतीय राष्ट्रीय सेना का गौरव बढ़ाया, भारत की **महान गोरखा सैन्य परम्परा का मान बढ़ाया,** गोरखा छेत्री समुदाय का मान बढ़ाया।

जब उन्हें फांसी की सजा मिल गयी थी और अंग्रेज उन्हें अपने गुनाह कबूल करने के लिए कह रहे थे तब दुर्गा मल्ल जी ने अपने कार्यों पर बिना किसी पछतावे के गर्व से भारत माता के लिए **अपने प्राणों का बलिदान देने का रास्ता चुना था।**

तिहाड़ जेल में उनसे मिलने आयीं उनकी पत्नी **वीर नारी शारदा मल्ल** को उन्होंने अपने अंतिम संदेश में कहा था –

मैं जो बलिदान दे रहा हूँ, वह व्यर्थ नहीं जाएगा।

भारत आजाद होगा, मुझे विश्वास है, यह केवल समय की बात है शारदा! चिंता मत करो, करोड़ों हिंदुस्तानी साथ हैं।

ये वे शब्द हैं जो उन्होंने मृत्यु दण्ड के बाद फांसी पर चढ़ने से पहले अपनी पत्नी से कहे थे।

25 अगस्त, शहीद दुर्गा मल्ल जी के फांसी के दिन को केवल गोरखा समुदाय ही नहीं बल्कि पूरे भारत में गोरखाओं और सभी के लिए सच में एक **'बलिदान दिवस'** और **'शहीद दिवस'** के रूप में श्रद्धांजलि अर्पित करने का महान अवसर बन गया है।

आज **'उत्तराखण्ड राज्य नेपाली भाषा समिति देहरादून'** की ओर से ऐसे वीर सेनानी की याद में **'डाक टिकट'** का विमोचन

किया जाना अपने आप में एक महान कार्य है। **शहीदों के प्रति हमारी जिम्मेदारी है।**

आप लोग नेपाली भाषा के प्रचार–प्रसार के लिए भी बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं, जो कि एक प्रसंशनीय कार्य है।

नेपाली भाषा कोभारत के संविधान में आठवीं अनुसूची में शामिल कर **गौरव और सम्मान दिया गया है।**

आप सभी के साथ मेरा जुड़ाव शुरू से ही है, **मुझे याद है, पिछले साल जब मैं राज्यपाल के रूप में उत्तराखण्ड आया ही था,** तब सबसे पहले **मुझे गोर्खाली समुदाय से जुड़ने का मौका मिला था।**

मैंने तब सैनिक कल्याण मंत्री और यहां के लोकप्रिय विधायक श्री गणेश जोशी जी, जो स्वयं एक सैनिक भी रहे हैं, उनके साथ 'गोर्खाली कम्युनिटी रेडियो' **'घाम छाया'** का उद्‌घाटन किया था।

मैं अभी भी जब गोर्खाली रेडियो 'घाम छाया' को सुनता हूँ तो **नेपाली और गोर्खाली भाषा केसुरीले गीत–संगीत** के साथ बहुत भाव विभोर हो जाता हूँ।

मुझे बहुत खुशी होती है कि 'घाम–छाया' मनोरंजन और ज्ञानवर्धक जानकारी के साथ–साथ **नेपाली भाषा और संस्कृति के प्रसार में भी योगदान दे रहा है।**

और अन्त में मैं आज के इस पवित्र अवसर पर **'उत्तराखण्ड नेपाली भाषा समिति देहरादून'** और **भारत के हर कोने में बसे गोर्खाली समुदाय को दिल की गहराइयों से शुभकामनाएं और बधाई देता हूँ।**

आप इसी तरह निरंतर **भारत की एकता, अखंडता, कला, संस्कृति, सांझी विरासत के प्रसार के लिए कार्य करते रहें** इन्हीं शुभकामनाओं के साथ बहुत–बहुत धन्यवाद!

जय हिन्द!